बाइबल टीचर

वर्ष 21 दिसम्बर 2023 अंक 1

सम्पादकीय

यीशु मसीह में होने का क्या अर्थ है?

प्रेरित पौलूस और दूसरे चेले भी एक बात को बार-बार बोलते थे कि मसीह में होना क्यों आवश्यक है। प्रेरित पौलूस ने भी इस बात को कहा था, जैसे कि रोमियों 8:1 में वह कहता है कि जो ''मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं''। सब आत्मिक आशिषें हमें मसीह में मिलती है। (इफि. 1:3)। हम मसीह में नई सृष्टि है। (इफि. 2:10) मसीह में आकर लोग नये बन जाते हैं, उनका आत्मिक जीवन बदल जाता है। (2 कुरि. 5:17)। हमारा संबंध परमेश्वर के साथ जुड़ जाता है। (इफि. 2:11-16) और सबसे बड़ी बात यह है कि मसीह में हमें उद्धार मिलता है क्योंकि और किसी नाम में उद्धार नहीं क्योंकि यीशु के अतिरिक्त हम और किसी नाम से उद्धार नहीं पा सकते। (प्रेरितों 4:12)।

इस बात को हमें मामूली तरीके से नहीं लेना है। यीशु ने भी कहा था कि मार्ग, सच्चाई और जीवन में ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता (यूहन्ना 14:6)।

यीशु में होने का अर्थ है हम परमेश्वर की संतान बन जाते हैं जो आत्मा के चलाए चलते हैं वे परमेश्वर की संतान है। (रोमियों 8:14) जब हम यीशु में विश्वास लाकर जल में बपतिस्मा लेते हैं तब मसीह को पहिन लेते है। (गलतियों 3:26-27)। यदि कोई मसीह में नहीं है तो वह आत्मिक रूप से परमेश्वर की संतान नहीं है। मसीह में होने के लिए मसीह में बपतिस्मा लेना आवश्यक है।

यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि सारी सृष्टि में जाकर सुसमाचार का प्रचार करो और जो लोग विश्वास लाकर यीशु में बपतिस्मा लेगें उनका उद्धार होगा। (मरकुस 16:15-16) विश्वास लाकर हम मसीह में बपतिस्मा लेकर मसीह में आ जाते हैं। प्रेरितों 2:38 में पतरस ने कहा था कि मन फिराओं और बपतिस्मा लो और

यही बात फिलिप्पुस ने इथिओपिया के खोजे को बोली थी कि मसीह में आने के लिये उसे मसीह में बपतिस्मा लेना है और उसने तुरन्त बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों 8:36-38)। कुरलीनियुस क्योंकि अन्य जाति से था, इसलिये पतरस ने उसे सिखाया और उसने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों 10:47) फिलिप्पुस के दरोगा ने भी यही किया था। (प्रेरितों 16:30-38)। शाऊल से कहा गया था कि, बपतिस्मा लेकर अपने पापों को धो डाल। (प्रेरितों 22:16)। मसीह में आने के पश्चात पौलुस अब परमेश्वर की संतान बन गया था। (गलतियों 3:27)।

जब हम बपतिस्मा लेकर मसीह में आ जाते हैं, तब हमारे पाप क्षमा हो जाते हैं। उसके लोहू के द्वारा हमें पापों की शान्ति मिलती है। (इफिसियों 1:7)। हमने अपने जीवन में बहुत सारे पाप किये होंगे परन्तु आशिष की बात यह है कि मसीह में आकर हमारे पापों से हमें छुटकारा मिल जाता है। (रोमियों 3:23-26)।

जब हम मसीह में बपतिस्मा लेते हैं तथा उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लेकर उसके साथ जुड़ जाते हैं तब यीशु का लोहू हमारे पापों को निरंतर धोता रहता है। (रोमियों 6:3-4, 1 यूहन्ना 1:7)। हमारे पाप इसलिये धो दिये जाते हैं कि हम यीशु के लोहू के सम्पर्क में आ जाते हैं। अब हम पाप के आधीन नहीं हैं, पाप के कारण मनुष्य और परमेश्वर के बीच एक दिवार थी (यशायाह 59:1-2) परन्तु यीशु ने पापों को अपने ऊपर लेकर उस पाप की दीवार को गिरा दिया। पाप के बंधन को यीशु ने तोड़ दिया इसलिये मनुष्य मसीह में आकर पाप की गुलामी से दूर हो जाता है। क्या आप आज मसीह में हैं? मसीह में आने के बाद आप के पास यह सुअवसर होता है कि आप परमेश्वर से प्रार्थना कर सकें। (यूहन्ना 9:31) यदि आप मसीह में हैं और एक मसीही हैं तब आपको प्रसन्न होना चाहिए कि आप अपने पिता परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं। यह एक आशिष की बाता हैं।

जब आप मसीह में आ जाते हैं तो आपको पवित्र आत्मा की सहायता मिलती है। पवित्र हमारी सहायता करता है ताकि हम प्रेम में चलें (रोमियों 5:5)। प्रार्थना करने में पवित्र आत्मा हमारी सहायता करता है। पौलुस ने मसीहियों से कहा था, ''सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो। जहाँ मसीह वर्तमान हैं और परमेश्वर के दहिने और बैठा है पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किये जाओगे। इसलिये अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभीचार, अशुद्धता, दुष्टकामना, बुरी लालसा और लोभ। (कुलुस्सियों 3:1-5)। मसीह में होने का अर्थ है, आपके पास अनन्त जीवन की आशा है। (2 कुरि. 5:1)।

वे यीशु के साथ रहे थे

सनी डेविड

अब इस समय हम पवित्र बाइबल का अध्ययन करने जा रहे हैं। बाइबल में छियासट पुस्तकें हैं, और इन पुस्तकों में एक पुस्तक का नाम है प्रेरितों के नाम की पुस्तक। प्रेरित यीशु मसीह के वे चेले थे जिन्होंने यीशु को देखा था। इन प्रेरितों को यीशु ने इसलिये चुना था और तैयार किया था कि उसके स्वर्गारोहण के बाद वे उसके सुसमाचार का प्रचार जगत भर में करेंगे। उन्हें प्रभु ने बाइबल की पुस्तकों को लिखने के लिए प्रेरणा भी दी थी। और जिस प्रकार प्रभु ने उनसे प्रतिज्ञा की थी, उसके स्वर्गारोहण के बाद, उन्हें पवित्रात्मा का बपतिस्मा भी मिला था जिसके फलस्वरूप उन्होंने बड़े-बड़ें सामर्थ के काम किए थे। (यूहन्ना 14:25; 16:13; प्रेरितों 1:4-8; 2:1-4; 5:12)। प्रेरितों के काम की पुस्तक में उन्हीं प्रेरितों के कामों का वर्णन हमें मिलता है।

इस पुस्तक के तीसरे अध्याय में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि एक दिन पतरस और यूहन्ना नाम के दो प्रेरित प्रार्थना के समय यहूदियों के मन्दिर में जा रहे थे, कि तभी कुछ लोग एक जन्म के लंगड़े को वहां ले आए और प्रति दिन की तरह उन्होंने उसे मन्दिर के द्वार पर बैठा दिया। यह जन्म का लंगड़ा वहां बैठकर प्रति दिन की तरह उन्होंने उसे मन्दिर के द्वार पर उसे बैठा दिया। यह जन्म का लंगड़ा वहां बैठकर प्रति दिन भीख मांगा करता था। और प्रत्यक्ष ही है कि वह बिल्कुल भी चलने के योग्य नहीं था, क्योंकि जैसे कि इस पुस्तक में आगे हम पढ़ते है कि उसकी उम्र चालीस साल की थी, परन्तु फिर भी हम देखते हैं कि उसे उसके कुछ सम्बन्धी वहां लेकर आते थे। सो हुआ यह, कि जब उस लंगड़े ने पतरस और यूहन्ना को मन्दिर के भीतर जाते देखा तो उसने सब की तरह उनसे भी भीख मांगी। परन्तु हम पढ़ते हैं, कि दोनों प्रेरितों ने उसकी ओर ध्यान से देखा। और फिर पतरस ने उस से कहा, कि हमारी ओर देख। यह सुन वह लंगड़ा कुछ प्रसन्न हुआ, क्योंकि उसने सोचा कि अवश्य ही उसको कुछ भीख मिलने जा रही है। सो वह उनसे कुछ पाने की आशा रखकर उनकी ओर देखने लगा। परन्तु तब पतरस ने उस से कहा, कि भाई चान्दी और सोना तो मेरे पास है नहीं, हां, जो मेरे पास है, वह मैं तुझे देता हूं, अर्थात् यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर। और तभी उसने उस लंगड़े का दाहिना हाथ पकड़ के उसे उठाया। सो लिखा है, कि तुरन्त उस लंगड़े के पांवों और टखनों में बल आ गया, और वह उछलकर खड़ा हो गया और चलने फिरने लगा।

यहां हम देखते हैं कि यह जो काम प्रेरितों ने किया वास्तव में बड़ा ही अदभुत और आश्चर्यजनक था। उन्होंने किसी ऐसे आदमी को चंगा नहीं किया जो पैरों में दर्द के कारण लगड़ा रहा था, परन्तु उन्होंने एक जन्म के लगड़े को, अर्थात जो मनुष्य लंगड़ा ही पैदा हुआ था उसको चंगा किया। और वह चंगाई अधूरी नहीं थी। परन्तु हम पढ़ते है कि वह मनुष्य जो कभी पहिले चला ही न था, अब उछलने और कूदने लगा। और इस काम को करने में उन प्रेरितों को दो मिनट भी नहीं लगे। उन्होंने कहा, और उठाकर उसे खड़ा कर

दिया और वह चलने-फिरने लगा। उन्होंने कोई बड़ी लम्बी प्रार्थना नहीं करी कोई मजमा नहीं लगाया, परन्तु उन्होंने कहा और वह मनुष्य चंगा हो गया। क्या आज इस प्रकार कोई मनुष्य किसी जन्म के लंगड़े या जन्म के अन्धें को कहकर तत्काल या तुरन्त चंगा कर सकता है? मित्रो, यह सामर्थपूर्ण शक्ति केवल यीशु और उसके प्रेरितों के ही पास थी।

परन्तु इस घटना के सम्बन्ध में आगे चलकर हम इस प्रकार पढ़ते है, कि इस आश्चर्यपूर्ण काम की चर्चा उस स्थान पर आग की तरह फैल गई। जिसने सुना वह अचम्भित और चकित होकर रह गया। और सबके सब लोग आकर उस जगह इकट्ठे होने लगे जहां प्रेरित पतरस और यूहन्ना और वह मनुष्य था जिस पर यह आश्चर्यजनक काम हुआ था। जब लोगों की भीड़ लग गई और वे सब यह जानना चाहते थे, कि वह लंगड़ा जिसको वे बरसों से भीख मांगते देखते आ रहे थे, किस प्रकार चंगा हो गया? तो पतरस ने उन्हें बताया कि उस अदभूत काम के करने वाले वे नहीं हैं परन्तु वास्तव में प्रभु यीशु मसीह है। ये सब लोग प्रभु यीशु मसीह से परिचित थे। क्योंकि उसी शहर में कुछ ही दिनों पहिले यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था। किन्तु पतरस ने उन्हें बताया, कि जिस यीशु को तुमने क्रूस पर चढ़ाया था उसी को परमेश्वर ने फिर से जीवित कर दिया, और हमने उसे देखा है और उसके गवाह हैं। क्योंकि यह अनहोना था कि वह उस कब्र में बन्द रहता जिसके भीतर उसे गाड़ा गया था। क्योंकि वह कोई मनुष्य नहीं था परन्तु परमेश्वर का पुत्र था। और यह काम हमने उसी के नाम से किया है। और फिर उन प्रेरितों ने उन लोगों को प्रभु यीशु के सम्बन्ध में और भी अद्भुत बातें बताई, जिसका परिणाम यह हुआ कि कई हजार लोगों ने उस दिन प्रभु यीशु में विश्वास किया। किन्तु जब यह बात मन्दिर के याजकों और अन्य अधिकारियों के कान तक पहुंची तो वे क्रोध से भर गए, क्योंकि उनके लिए यह बात बड़ी ही असहनीय थी कि इतने ढेर लोग उनके यहूदी धर्म को छोड़कर अब प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास ले आए थे। उन्होंने पतरस और यूहन्ना को पकड़कर एक कमरे में बन्द कर दिया। जब दूसरा दिन हुआ तो वे सब अधिकारी, अर्थात् मन्दिर के सरदार, पुरनिये और शास्त्री, इत्यादि, महायाजक अर्थात् मन्दिर के सबसे बड़े याजक के साथ एक जगह इकट्ठें हुए। और तब उनके बीच में प्रेरित पतरस और प्रेरित यूहन्ना को लाकर खड़ा कर दिया गया। सो वे लोग उन दोनों प्रेरितों से पूछने लगे, कि यह काम तुमने किस सामर्थ से और किस नाम से किया है? लिखा है, कि तब पतरस ने पवित्रात्मा से परिपूर्ण होकर उन सबसे यूँ कहा, कि,''हे लोगों के सरदारों और पुरनियों, इस दुर्बल मनुष्य के साथ जो भलाई की गई है, यदि आज उसके विषय में हमसे पूछ-ताछ की जाती है, कि वह क्योंकर अच्छा हुआ। तो तुम सब और सारे इस्त्राएली लोग जान लें कि यीशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला चंगा खड़ा है। यह वही पत्थर है जिसे तुम राज-मिस्त्रियों ने तुच्छ जाना और वह कोने के सिरे का पत्थर हो गया। और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।'' (प्रेरितों 4:9-12)।

कितना बड़ा हियाव तथा निश्चय यहां हमें इस प्रेरित के शब्दों में मिलता है। हम

देखते हैं, कि वे दो साधारण से अनपढ़ मनुष्य जिनका धन्धा मछलियां पकड़ने का था, वहां बड़े-बड़े अधिकारियों और महायाजक के सामने खड़े हैं। परन्तु उन्होंने वहां भी बड़े ही हियाव तथा निश्चय के साथ प्रभु यीशु का प्रचार उनके सामने किया। और यहां तक, कि वे सारे अधिकारी उनके हौंसले को देखकर दंग रह गए, और उन्होंने बड़ा ही अचम्भा किया कि इन दो साधारण, अनपढ़ मछुआरों के पास इतना हियाव कहां से आया। परन्तु क्षण भर में ही उन्हें इस बात का जबाव मिल गया। क्योंकि उन्होंने जान लिया, कि वे यीशु के साथ रहे है। (प्रेरितों 4:13)। वे प्रभु यीशु से परिचित थे। उन्होंने ही उसे क्रूस पर चढ़वाया था। वे जानते थे कि यीशु कितने हौंसले तथा हियाव के साथ उपदेश दिया करता था। और यहां तक कि तब उन्होंने उसे दोषी ठहराने के लिए महायाजक और देश के हाकिम के सामने भी प्रस्तुत किया था तो यीशु के हियाव तथा निश्चय में उन्हें कोई कमी नहीं दिखाई दी थी। जब यीशु ने पतरस और यूहन्ना और अपने अन्य चेलों को चुना था तो उसने उनसे कहा था, कि अब तक तो तुम मछलियों को पकड़ते रहे परन्तु अब से मैं तुम्हें मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाऊंगा। (मत्ती 4:19)। निश्चय ही, अब वे साधारण मछुए यीशु के सम्पर्क में आकर बदल चुके थे। अब उन्हें मछलियों को पकड़ने की परवाह नहीं थी, परन्तु अब वे लोगों की आत्माओं को बचाने की चिन्ता में लीन थे। जहां कहीं भी उन्हें अवसर मिलता था वे प्रभु यीशु के बलिदान तथा उसके सुसमाचार का प्रचार करते थे। वे हर एक मनुष्य को यह बता देना चाहते थे कि ''और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।'' (प्रेरितों 4:12)।

मित्रो, प्रभु यीशु के सम्पर्क में आकर मनुष्य वास्तव में बदल जाता है। सबसे पहिले, वह यह जानता है कि यीशु के बलिदान के कारण उसका उद्धार हुआ है। उसे इस बात का निश्चय हो जाता है कि जगत का उद्धारकर्त्ता केवल यीशु ही है। उसे सांसारिक वस्तुओं की चिन्ता नहीं रहती परन्तु वह आत्मिक बातों की चिन्ता करता है। वह जानता है कि यीशु स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आ गया ताकि उसके बलिदान के द्वारा जगत का उद्धार हो जाए। इसलिये वह प्रत्येक आत्मा की कीमत को पहिचानता है, और उसका यह प्रयत्न रहता है कि प्रत्येक आत्मा प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के सुसमाचार से परिचित हो जाए। उसका दृष्टिकोण और व्यवहार और सम्पूर्ण जीवन बदल जाता है। क्योंकि अब वह अपनी इच्छा से नहीं परन्तु अपने उद्धारकर्त्ता यीशु की इच्छा से चलता है। प्रेरित पौलुस एक जगह अपने विषय में लिखकर कहता है, कि ''जो-जो बातें मेरे लाभ की थी, उन्हीं को मैंने मसीही के कारण हानि समझ लिया है। बरन मैं अपने प्रभु मसीह प्रभु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं: जिसके कारण मैंने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूडा समझता हूं। जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूं'' (फिलिपियों 3:7, 8)। कितना बड़ा बदलाव हम इस मनुष्य के जीवन में देखते हैं! और एक और जगह बाइबल में लिखकर वह अन्य लोगों से इस प्रकार कहता है: ''क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए,

ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।'' (रोमियों 6:3-6): अर्थात्, मसीह में विश्वास लाकर बपतिस्मा लेने के बाद मनुष्य एक नए जीवन को पहिनकर नए जीवन की चाल चलने लगता है, वह पाप के दासत्व से छूटकर मसीह में, उसके बलिदान के कारण, एक नया मनुष्य बन जाता है। और ऐसा परिवर्तन हम में से हर एक मनुष्य के लिये आवश्यक है, क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा है, कि यदि कोई मनुष्य नए सिरे से जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। (यूहन्ना 3:3-5)।

कलीसिया की उपासना

जे. सी. चोट

कलीसिया उद्धार पाए हुए जनों से मिलकर बनी हुई है। इसका उद्देश्य यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की उपासना व सेवा करना है। पौलुस ने कहा, "और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।" (कुलुस्सियों 3:17)।

नऐ नियम में तीन प्रकार की उपासना का वर्णन मिलता है। पहिले, हम अनजानी उपासना के विषय में पढ़ते हैं जब पौलुस अथेने में अरियुपगुस के बीच में था, उसने स्वयं को चारों ओर से मूरतों से घिरा हुआ पाया, और उसने कहा, "क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, कि "अनजाने ईश्वर के लिए।" सो जिसे तुम बिना जान पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं।" (प्रेरितों 17:23)। जिस प्रकार से वहां उस समय लोग अनजानी उपासना किया करते थे, आज भी बहुतेरे लोग ठीक उसी प्रकार से करते है। केवल इतना ही नहीं कि लाखों व्यक्ति मूर्तियों व प्रतिमाओं के सामने झुकते है, परन्तु इससे भी अधिक संख्या में लोग धर्म के नाम में इस प्रकार के विभिन्न कार्य कर रहे है जिनका वर्णन पवित्रशास्त्र में कहीं पर भी नहीं मिलता। दूसरे, प्रभु का वचन उन लोगों के विषय में बतलाता है जो व्यर्थ में उपासना करते है। प्रभु यीशु ने कहा, "और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते है, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते है।" (मत्ती 15:9)। आज अधिकांश लोग इसी प्रकार से उपासना करते है। वे प्रभु की उपासना करते हैं, यह सत्य है, किन्तु उनकी उपासना व्यर्थ व शून्य है, क्योंकि वह मनुष्यों की बनाई हुई विधियों तथा शिक्षाओं के अनुसार है व परमेश्वर की इच्छानुसार नहीं। तीसरे, परमेश्वर का वचन सच्ची उपासना के विषय में शिक्षा देता है, अर्थात् जो आत्मा और

सच्चाई से है। यीशु मसीह ने स्वयं कहा था, "परमेश्वर आत्मा है; और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।" (यूहन्ना 4:24)। केवल यही एक उपासना है जिसे परमेश्वर स्वीकार करता है। यह उपासना आत्मा से (दीनता और समझ से) तथा सच्चाई से (जिस प्रकार से लिखा है) परमेश्वर को अर्पित की जाती है। उपासना करने के लिये परमेश्वर किसी को भी विवश या बाध्य नहीं करता, किन्तु वे जो उसकी उपासना करते है उन्हें चाहिए कि वे उसकी इच्छानुसार करें।

प्रभु की कलीसिया को किस प्रकार की उपासना करनी चाहिए? निश्चित रूप से, अनजानी उपासना नहीं, और न ही मनुष्यों की बनाई हुई शिक्षाओं अथवा विधियों के अनुसार। इसकी अपेक्षा, हमारी उपासना आत्मा और सच्चाई से होनी चाहिए ताकि वह परमेश्वर को स्वीकारय हो। नए नियम का अध्ययन करने से हमें विभिन्न आज्ञाओं तथा उदाहरणों द्वारा ज्ञात होता है कि आरंभ में मसीही लोग उपासना करने में निम्नलिखित पांच नियमों को उपयोग में लाते थे :

1. **वे परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के लिये एकत्रित होते थे।** यद्यपि तीमुथियुस को बालकपन से ही पवित्र शास्त्र की शिक्षा मिली थी (2 तीमुथियुस 3:15) तो भी इस युवा प्रचारक को पौलुस उपदेश देता है कि, "अपने आपको परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।" (2 तीमुथियुस 2:15)। प्रत्येक मसीही को ऐसा ही करना चाहिए। प्रेरितों 20:7 में पढ़ते हैं कि पौलुस सभा में प्रचार करता है ताकि भाइयों को सीखने का अवसर मिले। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा अपने बालकों से बातें करता है।
2. **वे प्रार्थना करते थे।** पिन्तेकुस्त के दिन जब लोगों ने प्रभु की आज्ञा को माना, इसके बाद, हम पढ़ते हैं, "और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में, और रोटी तोड़ने में, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।" (प्रेरितों 2:42)। प्रार्थना के द्वारा प्रभु के लोग अपने स्वर्गीय पिता से बातें करते हैं।
3. **वे स्तुतिगान गाते थे।** पौलुस ने मसीही भाइयों को लिखा, "और आपस में भजन, और स्तुतिगान, और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के साम्हने गाते और कीर्तन करते रहो।" (इफिसियों 5:19)। कुलुसियों 3:16 व इब्रानियों 13:15 को भी पढ़िए। संगीत दो प्रकार के होते हैं, अर्थात् कंठ-संगीत तथा वाद्य संगीत। परमेश्वर किस प्रकार का संगीत चाहता है? उसने कंठ-संगीत के उपयोग के लिए आज्ञा दी है। पौलुस कहता है कि हमें अपने मन में प्रभु के सामने कीर्तन करना चाहिए। इसलिए, वाद्य-संगीत के उपयोग का प्रश्न ही नहीं उठता। प्रथम मसीही गाकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थें। सैकड़ों वर्षों के बाद मनुष्यों ने वाद्य-संगीत का उपयोग आरंभ किया, परन्तु न तो परमेश्वर ने इसको उपयोग में लाने का आदेश दिया, और न ही वह इसे स्वीकार करेगा। जिस प्रकार से परमेश्वर की प्रशंसा वाद्य-प्रार्थनाओं के

द्वारा नहीं की जा सकती उसी प्रकार से मसीही उसकी स्तुति वाद्य-संगीत बजाकर नहीं कर सकते।

4. **वे प्रभु भोज में भाग लेने के लिये एकत्रित होते थे।** प्रेरितों 20:7 में हमें इसका उदाहरण मिलता है। मत्ती 26:26-28 और 1 कुरिन्थियों 11 अध्याय से हमें शिक्षा मिलती है कि यीशु मसीह की देह को स्मरण करने के लिए हमें रोटी में से खाना चाहिए तथा उसके लोहू को स्मरण करने के लिये दाखरस पीना चाहिए। व यह हमें सदैव करना चाहिए।
5. **वे अपने अपने धन में से देते थे।** पौलुस ने गलतिया और कुरिन्थुस में मसीहियों को आदेश दिया, "सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर चंदा न करना पड़े।" (1 कुरिन्थियों 16:2)। 2 कुरिन्थियों 9:7 भी पढ़िए।

प्रथम मसीही प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन उपासना करने के लिये एकत्रित होते थे। (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:2)। उन्हें चिताया गया था, "और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहे, और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो।" (इब्रानियों 10:25)। आज भी मसीहियों को प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन उपासना के इन्हीं नियमों का पालन करना चाहिए तथा ऊपर लिखित चेतावनी को ध्यान में रखना चाहिए।

कलीसिया की उपासना इतनी सरल व सही है कि बहुतेरे लोग इसकी सरलता के कारण ठोकर खाते हैं। वे सोचते हैं कि उपासना में विभिन्न यथाविधियों व परम्पराओं तथा नीरस कार्यों व प्रार्थनाओं का दोहराना इत्यादि सम्मिलित होना चाहिए। किन्तु ऐसा नहीं है। उपासना के विषय में परमेश्वर ने अपनी इच्छा प्रगट की है तथा मनुष्य को यह अधिकार नहीं दिया गया कि वह इसमें तनिक सा भी बदलाव लाए। इसमें न तो कुछ भी बढ़ाया जा सकता है और न ही कुछ भी घटाया जा सकता है, परन्तु वे जो ऐसा करेंगे वे प्रभु की ओर से स्त्रापित होंगे। परमेश्वर ने आज्ञा दी है और उसके लोगों को चाहिए कि वे उसकी आज्ञा मानें। तभी और केवल तभी परमेश्वर की उपासना, प्रशंसा व स्तुति हो सकती है।

मनुष्य का भाई

बैटी बर्टन चोट

कुछ समय पूर्व हमने इस बात पर ध्यान करके देखा था कि परमेश्वर के वचन को ठीक प्रकार से काम में न लाने के कारण अनेकों लोग परमेश्वर को वास्तव में ठीक से नहीं समझ पाते। यदि हम यीशु मसीह को वास्तव में सही रूप में समझना चाहते हैं, तो उसके विषय में इस कथन का सही अर्थ भी समझना बड़ा ही आवश्यक है कि उसके बारे में लिखा है कि वह,

''सब बातों में अपने भाईयों के समान बने।'' (इब्रानियों 2:17)।

इस बात का अर्थ क्या है? यदि इस कथन का सही अर्थ हमें समझ में आ जाता है, तो बाइबल में लिखी यीशु के बारे में अनेकों बातें भी हमारी समझ में आ जाएंगी।

सो कल्पना करके आप एक ऐसे विशाल राज्य पर विचार करें, जहां एक बड़ा ही शक्तिशाली राजा राज्य करता है। परन्तु अचानक उस राज्य में एक महामारी फैल जाती है, जिससे हज़ारों लोग मरने लगते हैं। वह राजा अपनी प्रजा के लोगों से बहुत अधिक प्रेम करता है। इसलिये वह अपने ताज और राज-पोशाक उतारकर साधारण वस्त्र पहन लेता है। फिर वह अपने राज-महल को छोड़कर उन लोगों की सहायता करने के लिये निकल पड़ता है जो बीमार हैं और तड़प-तड़पकर मर रहे हैं।

ठीक ऐसा ही परमेश्वर ने इस संसार के लिये किया था, जब उसने देखा था कि संसार में सभी लोग पाप के कारण नाश हो रहे हैं।

''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था... .और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया।'' (यूहन्ना 1:1, 14)।

इब्रानियों 10:5 में लिखा है, कि परमेश्वर ने वचन के लिये एक देह तैयार की थी ताकि वह एक मनुष्य बनकर मनुष्यों के बीच में रहे। और इब्रानियों 2:14-17 के अनुसार:

> ''इसलिये जबकि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनका सहभागी हो गया.....क्योंकि वह तो स्वर्गदूतों को नहीं वरन् अब्राहम के वंश को सम्भालता है। इस कारण उसको चाहिए था कि सब बातों में अपने भाईयों के समान बने।''

जैसे कि हमने उस राजा की कल्पना करके देखा था कि अपना सब कुछ छोड़कर लोगों के पास जाने के बावजूद भी वह एक राजा ही था, ऐसे ही वचन भी जब देहधारी होकर एक मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आया था, तो वह ईश्वर ही था। परन्तु जिस प्रकार से उस राजा ने उन सब वस्तुओं को त्याग दिया था जो उसके राजा होने की प्रमाणक थीं, उसी प्रकार वचन भी शून्य बनकर एक मनुष्य बन गया था।

पुत्र बन गया

परमेश्वर के सम्बंध में इस परिवर्तन का उल्लेख भजन संहिता 89:24-29 में हुआ था। और इसी भविष्यवाणी को समझाकर इब्रानियों 1:5 में लेखक कहता है, कि परमेश्वर ने मसीह के बारे में कहा था:

> ''तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ'' और फिर यह, कि ''मैं उसका पिता होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा।''

इन बातों का अभिप्राय एक निश्चित समय से था, अर्थात् वह समय जो आनेवाला था जब मसीह परमेश्वर का पुत्र बनकर पृथ्वी पर आ गया था। ''मैं उसका पिता होऊंगा, और वह मेरा पुत्र होगा,'' इस बात का प्रतीक है, कि जिस समय यह बात कही गई थी

उस समय वचन ''परमेश्वर का पुत्र'' बनकर प्रकट नहीं हुआ था। उस समय तक वचन ने अपने आपको शून्य बनाकर मनुष्य का रूप धारण नहीं किया था; उस समय तक वह परमेश्वरत्व में परमेश्वर के समान था। वह परमेश्वर था।

परन्तु परमेश्वर ने भविष्य को देखकर कहा था, ''कि जब समय पूरा होगा'' तो उस समय वचन परमेश्वर की इच्छा से मनुष्य बनकर एक मनुष्य के रूप में प्रकट होगा और तब ''वह मेरा पुत्र होगा।'' उसने यह नहीं कहा था, कि वह ''किसी मनुष्य का पुत्र होगा'' परन्तु यह कहा था, कि ''वह मेरा पुत्र होगा।''

इन शब्दों का चुनाव बड़ा ही महत्त्वपूर्ण था, क्योंकि यीशु ने कहा था अपने बारे में, कि मैं, ''मनुष्य का पुत्र'' और ''परमेश्वर का पुत्र'' हूं, ये दोनों ही बातें यीशु ने स्वयं अपने ही बारे में कही थीं।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा कब पूरी हुई थी?

''.....परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत .....एक कुंवारी के पास भेजा गया... ....स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा, 'हे मरियम भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान् होगा और परम प्रधान का पुत्र कहलाएगा।'' (लूका 1:26-32)।

मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, ''यह कैसे होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं। स्वर्ग दूत ने उसको उत्तर दिया, पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परम प्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी; इसलिये वह जो उत्पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।'' (लूका 1:34, 35)।

यहां हम दो खास बातों को देखते हैं। एक तो यह कि उसके पुत्र होने की बात को भविष्य में होने के लिये बताया गया है, जैसे कि इब्रानियों 1:5 में हमने पढ़ा था। यहां इस प्रकार नहीं कहा गया है, कि ''वह उत्पन्न होने वाला परमेश्वर का पुत्र है,'' परन्तु यह कि वह ''परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।''

दूसरे, हमें बताया गया है, 35 आयत में कि वह, अर्थात् यीशु मरियम के गर्भ में पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से प्रवेश करेगा। और मत्ती 1:18-20 में इसी विषय में यूं लिखा है कि:

> ''वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई....क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है।''

आत्मा की सामर्थ्य से

तो, फिर यीशु को ''परमेश्वर का पुत्र'' क्यों कहा गया है? ''आत्मा का पुत्र'' क्यों नहीं? इस सच्चाई को इस प्रकार क्यों व्यक्त किया गया है?

सर्वप्रथम, तो इसलिये क्योंकि परमेश्वर ने इस प्रकार अपने एक ही होने को व्यक्त किया है, अर्थात् वह और पवित्र आत्मा एक हैं। और दूसरे इसलिये क्योंकि परमेश्वर यह दर्शाना चाहता है कि आत्मा का कार्य, परमेश्वरत्व में, जीवन प्रदान करना है। इसी विषय

में आगे चलकर हम देखेगें कि यीशु मसीह के जगत में आने के पश्चात आत्मा के ही द्वारा संसार में सभी लोगों को परमेश्वर के संतान बनने का अवसर प्रदान हुआ था। किन्तु, यहां भी हम देखते हैं, कि जिस प्रकार, आत्मा के कार्य के द्वारा वचन मसीह के रूप में आया था, उसी प्रकार अन्य लोग भी आत्मा के कार्य के द्वारा ही उसके भाई बनते हैं।

प्रभु यीशु के कथन अनुसार, ''जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।'' (यूहन्ना 3:5)।

> ''क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे, यदि आत्मा से देह कि क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे। इसलिये, कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के अनुसार चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।'' (रोमियों 8:13, 14)।

सो एक बार फिर से हम उसी प्रश्न पर लौटकर आते हैं कि, भजन संहिता 89:24-29 में की गई भविष्यवाणी कब पूरी हुई थी? इसका उत्तर यह है, कि जब वचन मनुष्य बन गया था, तो उसी समय वह परमेश्वर का पुत्र बन गया था। अर्थात्, जब उसने अपने आपको शून्य बनाकर परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिये स्वयं को परमेश्वर के वश में कर दिया था, और मनुष्य बनकर पृथ्वी पर जन्म ले लिया था। उसी समय का वर्णन करके लेखक इब्रानियों 1:6 में इस प्रकार कहता है:

> ''और जब पहलौठे को जगत में फिर लाता है, तो कहता है, परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत करें।''

इसी बात के पूरा होने पर लूका 2:7-14 में लेखक इस प्रकार कहता है:

> ''और वह अपना पहलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा....और उस देश में कितने गड़रिये थे, जो रात को मैदान में रहकर अपने झुण्ड का पहरा देते थे। और प्रभु का एक दूत उनके पास आ खड़ा हुआ, और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमका....तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, 'मत डरो, क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं, जो सब लोगों के लिये होगा, कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है' ....तब एकाएक उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गदूतों का दल परमेश्वर की स्तुति करते हुए और यह कहते दिखाई दिया, आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो।''

पहलौठा

यीशु मसीह को इब्रानियों 1:6 में परमेश्वर का पहलौठा कहकर सम्बोधित किया गया है। किसी परिवार में जब पहले बच्चे का जन्म होता है तो उसे पहलौठा कहा जाता है। इसके बाद उस परिवार में और भी भाई-बहन उत्पन्न हो सकते हैं, परन्तु पहलौठे का स्थान उसी संतान का होता है जो सबसे पहले जन्मा था।

परमेश्वर के परिवार में उसके जितने भी संतान हैं उन सब में यीशु मसीह का स्थान पहलौठे पुत्र का है। यूं तो अब्राहम भी परमेश्वर की संतान है, और दाऊद भी परमेश्वर

की संतान है पर क्योंकि यीशु ने परमेश्वर के पहलौठे के रूप में पृथ्वी पर आकर उन सब के लिये परमेश्वर के संतान होने का मार्ग बना दिया था जो परमेश्वर के लेखे में उसके संतान बनने के योग्य हैं, न केवल वे जो मसीह के बाद परमेश्वर के पास आए हैं परन्तु उन सब के लिये भी जो मसीह के पृथ्वी पर आने से पहले थे, इस कारण से यीशु मसीह परमेश्वर का पहलौठा है।

इस बात को सही रूप से समझने के लिये हमें इस प्रश्न का उत्तर जानना आवश्यक है: कि मसीह के पृथ्वी पर आकर जन्म लेने से पहले क्या कोई ऐसा मनुष्य कभी हुआ था कि वह अपने ही बल-बूते पर परमेश्वर के पास जाने के योग्य था? क्या कोई मनुष्य पाप के बिना था? एक भी नहीं था। इसलिये, निसंदेह, यदि मसीह सबसे पहले एक मनुष्य के रूप में होकर परमेश्वर का पुत्र न बनता, तो पृथ्वी पर किसी को भी परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार कभी प्राप्त नहीं होता।

इसी विचार की पुष्टि करके इब्रानियों की पत्री का लेखक इब्रानियों 9:15 में कहता है, कि मसीह की मृत्यु के कारण न केवल हमें ही अपने पापों से छुटकारा पाने की आशा मिलती है, परन्तु ''उसकी मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई है'' उन्हें भी उद्धार प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है।

रोमियों 8:29 में लिखा है, कि परमेश्वर ने यह पहले ही से ठहराया था, कि उसके सभी संतान उसके पुत्र की समानता पर ही हों,

> ''क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है, उन्हें पहले से ठहराया भी है, कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाईयों में पहलौठा ठहरे।''

गलतियों 4:4-7 को पढ़कर हम यह सीखते हैं, कि यीशु ने परमेश्वर के पुत्र के रूप में इसलिये जन्म लिया था ताकि जिनका छुटकारा हुआ है उन्हें,

> ''लेपालक होने का पद मिले। और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो 'हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है', हमारे हृदयों में भेजा है।''

सो इस प्रकार हम यह देखते हैं कि केवल यीशु मसीह के द्वारा ही हमें परमेश्वर के संतान बनने का अवसर मिलता है। जैसे कि कुलुस्सियों 1:15-18 में भी हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

> ''वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हों, अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं। वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है, वही आदि है, और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।''

इन सब बातों से हम यह सीखते हैं कि यीशु का स्थान सारी वस्तुओं में प्रमुख है,

क्योंकि सब वस्तुओं की रचना उसी के द्वारा और उसी के लिये की गई थी। परन्तु पहलौठे शब्द का तात्पर्य केवल यहीं तक नहीं है कि यीशु का स्थान सब वस्तुओं में पहला है। पर इसका अभिप्राय इससे भी बड़ा है, इसका अर्थ वास्तव में इस बात से है कि यीशु परमेश्वर की सामर्थ्य से जन्मा उसका पहला पुत्र है, और वह उसके समान और उसके प्रतिरूप में है, और उसका वारिस है। (इब्रानियों 1:2; गलतियों 4:7)।

यहां से हमें जो सीखने को मिलता है वह यह है:

1. वचन ने अपने आपको शून्य बनाकर मनुष्य की देह को अपने ऊपर धारण कर लिया था।

2. वह परमेश्वर के द्वारा जन्मा उसका पहला पुत्र बन गया था, और इस प्रकार उसने सभी अन्य लोगों के लिये परमेश्वर के संतान बनने का रास्ता खोल दिया था।

3. वह अपने पिता का आज्ञाकारी बन गया था।

एक प्रचारक आया (1 थिस्स. 2:1, 2)

अर्ल डी एडवर्डस

इस अध्याय की पहली दो आयतें हमें वापस प्रेरितों 16 और 17 में ले जाती हैं। अध्याय 16 में हम फिलिप्पी में कलीसिया का आरम्भ देखते हैं, और अध्याय 17 में हम थिस्सलुनीके की कलीसिया का आरम्भ देखते हैं, जो फिलिप्पी से लगभग साठ मील दूर था।

फिलिप्पी में पौलुस ने जो सताव सहा, वह उसे थिस्सलुनीके आने और वहाँ के लोगों को सुसमाचार प्रचार करने से रोक नहीं पाया। अपने प्रचार में वह दृढ़ था और दूसरों के प्रति अपने उद्देश्यों और कार्यों से सच्चाई से परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता था।

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को स्मरण कराया कि उसे बंदी बनाया गया, पीटा गया, बंदीगृह में डाला गया, और अपमानित किया गया; परन्तु इनमें से कोई भी कठिनाई मुझे थिस्सलुनीके आने से रोक नहीं पाई। वह सुसमाचार के साथ उनके पास आया, जिसे वे सुनकर अपने मन में बिठा चुके थे। ये दोनों आयतें प्रचारक के प्रकार के बारे में वर्णन करते हैं जो कठिन परिस्थितियों में खड़े होने के लिये चाहिए। कौन विपरीत परिस्थितियों में सुसमाचार को लेकर जाएगा?

उत्साह रखने वाला पुरूष। उसे दृढ़ता से विश्वास करने की आवश्यकता होगी कि दूसरों तक सुसमाचार का प्रचार किया जाना चाहिए। क्यों पौलुस इस संसार में आया था और क्यों प्रचार करने एक स्थान से दूसरे स्थान जाया करता था? इसका केवल एक ही उत्तर है। उसे अपने अनुभव से यह प्रेरणा मिली थी कि मसीह का सुसमाचार प्रचार किया जाना चाहिए।

सिद्धांतों पर चलने वाला पुरूष। उसे सुसमाचार के लिये लोगों की जरूरत का ज्ञान होना चाहिए ताकि वह दु:ख उठाने के लिये तैयार हो जिससे वे उसे सुन सकें।

जब फिलिप्पी में पौलुस का निरादर किया गया, तब वह आसानी से हिम्मत हारकर कभी भी सुसमाचार का प्रचार नहीं कर पाया होता। परन्तु, फिलिप्पी छोड़कर वह थिस्सलुनीके आ गया, यह जानते हुए भी कि ठीक उसी प्रकार का व्यवहार वहाँ भी उसका प्रतीक्षा कर रहा होगा एक पुरानी कहावत है ''परमेश्वर ने शांति की यात्रा का वायदा नहीं किया; उसने केवल कुशल क्षेम से पहुँचने का वायदा किया है।'' पौलुस जानता था कि प्रचार कार्य कभी-कभी व्यक्तिगत दु:ख ला सकता है, परन्तु वह उसका मूल्य जानता था।

धीरज धरने वाला पुरूष। सहनशीलता जरूरी है। पौलुस के पास दृढ़ निश्चय का गुण था। सताव, लज्जा, निंदा और मारा कूटा जाना उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते थे।

आश्चर्य की बात नहीं है, कि परमेश्वर ने पौलुस को सफलता दी। स्वर्गीय दृष्टिकोण से, एक प्रचारक बन के दिखाना केवल शिक्षा प्राप्त करने, लोगों के बीच बोलने की कला जानने और वचन का ज्ञान होने से कहीं बढ़कर है। ये सभी गुण जरूरी है, परन्तु, उसे सताव के दर्द के साथ स्थिर खड़े रहने के योग्य भी होना जरूरी है।

बाइबल के अध्ययन में

जॉन थियेसन

बाइबल के प्रति हमारा जैसा रवैया होगा उसी से यह तय होगा कि हमें इसमें से क्या सीखने को मिलता है। बहुत से लोगों का कहना है कि परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने से दो अलग अलग लोग अपना अपना निष्कर्ष निकाल सकते हैं। यह रवैया गलत है जो कि हमारे अध्ययन को बुरी तरह से प्रभावित करेगा।

सही रवैया यह है कि परमेश्वर चाहता है कि सब लोगों को उसके वचन से एक ही संदेश मिले। बाइबल के पास इसमें से सच्चाई मिलने, परमेश्वर की पुस्तक से कुछ गुप्त, रहस्यमई बातों का अर्थ जानने के संदेह के साथ जाते हैं। नतीजा यह होता कि हम स्पष्ट सच्चाई के बजाय यह मानकर कि परमेश्वर अपने वचन के साथ कोई जादू करेगा, गुप्त अर्थ ढूंढ़ने में लग जाएंगे। यह अविश्वास वाला रवैया है, और इसके कारण अंत में हम और उलझ जाएंगे।

परमेश्वर चाहता हैं कि हम सब बाइबल को एक ही तरह से समझें। परमेश्वर चाहता है कि हम सच्चाई को जानें, इस पर विश्वास करें और इस पर अमल करें। वह हमें अपने और अपने पुत्र के ज्ञान से और पापों की क्षमा तथा अनन्त जीवन की सभी आशिषें देकर जो कि वह मुफ्त में देता है, आनन्दित करना चाहता है। वह ऐसा परमेश्वर नहीं जो हमारे रास्ते में कंकर फैंके और हमारी नजरों से सच्चाई को छिपा ले। यह जानने के लिए कि वह कितनों को मूर्ख बना सकता है या हैरान कर सकता है, वह हमारे यह मान लेने पर कि बाइबल एक ऐसा रहस्य है जिसे कोई समझ नहीं सकता, शैतान को बड़ी खुशी होगी।

परमेश्वर हम से अपने वचन के द्वारा बात कर रहा है

हमें बाइबल के पास यह रवैया लेकर जाना चाहिए कि परमेश्वर हमारे साथ बात कर रहा है। इसमें लिखी बातें किसी अनुभव से या प्रसिद्ध लोगों के विचार नहीं है। वे प्रतिभाशाली नाटककारों, कलाकारों, राजनेताओं या कविओं की पुस्तक की बातें नहीं हैं। अधिक लेखक सामान्य लोग और सामान्य काम काज करने वाले थे। परन्तु उन सब में एक बात सामान्य थी कि परमेश्वर ने उनके द्वारा संसार से बात करना चुना था। प्रेरणा देकर उनके मनों में चमत्कारी ढंग से वे बातें डाली जिन्हें वह उसके विचारों को आगे बताने के लिए उन्हें इस्तेमाल करना चाहता था। ''भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलेंगे'' (2 पतरस 1:21)।

यदि हमारा रवैया यह होगा तो हम परमेश्वर को इन नबियों के द्वारा बात करते हुए बड़े आदर से सुनेंगे।

बाइबल के पास अधिकार है

बाइबल के प्रति हमारा एक और रवैया होना आवश्यक है कि इसके पास अधिकार यानी अथॉरिटी है। यानी हमें यह मानना आवश्यक है कि यह केवल वह शिक्षा देती है जो हमें स्वर्ग में ले जाएगी। परन्तु प्रभु की और से पवित्र बाइबल के पन्नों में प्रकट किए गए ढंग को छोड़ परमेश्वर का कोई और विचार, नैतिकता का और नियम, परमेश्वर तक पहुंचने का कोई और माध्यम नहीं दिया गया है। यदि हमारा रवैया यह नहीं है तो हम झूठी शिक्षा देने वालों का आसानी से शिकार हो जाएंगें। यानी वे आसानी से हमें ऐसे रास्ते पर ले जाएंगे जो गलत दिशा में है और परमेश्वर से दूर ले जाता है।

एक मीरास दी गई

(इफि. 1:10-13)

जे लाकहर्ट

... उसी में

जिस में हम भी उसी की मंशा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है। पहिले से ठहराए जाकर मीरास बने। कि हम जिन्होंने पहिले से मसीह पर आशा रखी थी, उस की महिमा की स्तुति के कारण हों। उन के द्वारा जो मसीह में हैं आत्मिक आशिषें पाए जाने की अपनी सूची को आगे बढ़ाते हुए पौलुस ने मसीह में मसीही की मीरास की बातें कीं।

आयतें 10, 11. पौलुस ने कहा था कि हमें मसीह में परमेश्वर की मंशा के अनुसार उस के साथ मिलाया गया है। उस ने आगे कहा कि जिन्हें मसीह में परमेश्वर के साथ मिलाया गया भाग दिया गया है ताकि वे मीरास बनें। यह छठी आत्मिक आशीष है। KJV के विपरीत जहां आयत 10 में वाक्य के भाग में दिया गया है, NASB में आयत 11 के वाक्य में ''मीरास'' के साथ ''उस में'' (आयत 10 के

अन्त में मिलता है) उन्हें रखा गया है। इस भाग के साथ चलते हुए पौलुस ने ध्यान दिलाया कि मसीही व्यक्ति को एक विशेष विरासत मिली है। उसी में (''जिस में'') इस अतिरिक्त आशीष को बताता है।

यूनानी क्रिया eklerothemen के अनुवाद मीरास बनें वाक्यांश पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। यह शब्द kleroo से लिया गया है, जिसका अर्थ है ''चिट्ठियां डालना, चिट्ठी से तय करना, और ''दिया गया भाग।'' लिंकोन ने ध्यान दिलाया कि यहां क्रिया शब्द कर्मवाच्य में है, जिस में कर्त्ता पर काम किया जाना है और उस में ''चिट्ठी के द्वारा नियुक्त किए जाने'' की शक्ति है। सम्बन्धित संज्ञा शब्द kleros का इस्तेमाल कुलुस्सियों 1:12 में हुआ है, जहां परमेश्वर को योग्य विश्वासियों को ''ज्योंति में पवित्र लोगों की मीरास में अभी होने'' को कहते हुए दिखाया गया है। सप्तति अनुवाद (LXX) में, kleros का इस्तेमाल गिनती 26:55, 56 में इस्त्राएल के गोत्रों में प्रतिज्ञा किए हुए देश के विभाजन के संदर्भ में किया गया है। LXX में व्यवस्थाविरण 9:29 और 32:8, 9 में भी इस्त्राएल को परमेश्वर का ''भाग'' बताया गया है। सम्बन्धित संज्ञा शब्द के ऐसे उपयोगों के कारण कुछ व्याख्याकार सुझाव देते हैं कि इफिसियों 1:11 में क्रिया शब्द का अनुवाद ''हमें परमेश्वर के भाग के रूप में चुना गया है'' होना चाहिए। कुलुस्सियों 1:12 कहता है कि परमेश्वर ने एक विशेष भाग के लिए विश्वासियों को योग्य बनाया और इफिसियों की इस आयत में कहा गया है कि परमेश्वर ने एक भाग नियुक्त किया या दिया है। परमेश्वर की संतान होने के कारण हम परमेश्वर के वारिस हैं और हमें मीरास मिली है, परन्तु इस आयत का एक बेहतर विचार यह है कि हम अपने आप में परमेश्वर की मीरास हैं। इस बात को विशेष रूप से प्राथमिकता दी जाती है, जब हम आयत 12 में आते हैं जहां हम देखते हैं कि परमेश्वर की ठहराई हुई मीरास के रूप में हमारा अस्तित्व ''उस की महिमा की स्तुति'' होने के लिए हैं।

आयत 11. अपने लोगों के लिए परमेश्वर की मंशा उस के प्रेम (1:4), उस की ''भली मंशा'' 1:5, 9), और उस के अनुग्रह (1:6-8) के कारण होती है। जो लोग *मसीह में* हैं वे परमेश्वर की पहले से ठहराई हुई पसंद के द्वारा उस मीरास में हैं (देखें 1:4,5)।

तीन शब्दों की और समीक्षा की आवश्यकता है। पहला **मंशा** (prothesis) शब्द योजना उद्देश्य, इच्छा करना है। यह परमेश्वर के जान-बूझकर बनाए डिजाइन का सुझाव देता है। विश्वासी व्यक्ति मसीह में जो कुछ बना वह अपने आप या संयोग से नहीं हुआ बल्कि परमेश्वर के ''अनन्त डिजाइन'' से था।

दूसरा शब्द **इच्छा** है, जो यूनानी संज्ञा शब्द thelema का अनुवाद है। नये नियम में यह शब्द लगभग साठ बार मिलता है। कुछ अपवादों के साथ इसका अनुवाद ''इच्छा'' हुआ है और आमतौर पर इसका अर्थ परमेश्वर की इच्छा होता है। जहां इवनसम का अर्थ कुछ करने का निर्णय लेना है, वहीं thelema उस इच्छा का संकेत देता है जो हमें कार्य करने को कहती है। परमेश्वर की मंशा में परमेश्वर के यह

विचार करने और जो वह इवनसम करना चाहता था उस पर तर्क देते हुए ईश्वरीय बुद्धि शामिल थी। परमेश्वर के प्रेम से प्रेरित होने पर ईश्वरीय भावना भी शामिल थी। अन्त में ईश्वरीय इच्छा शामिल थी, क्योंकि परमेश्वर ने मसीह में अपनी योजना को अंजाम दिया (thelema)। रोमियों 8:28 में जब पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ''सब बातें'' मिलाता है, तो वह छुटकारे और संसार में पाई जाने वाली सब घटनाओं पर परमेश्वर के सर्वशक्तिमान होने की बात कर रहा था। कलीसिया में और संसार में सब कुछ उस की मंशा को पूरा करते हुए ही होता है जिस में वह मनुष्य की भलाई और अपनी महिमा के लिए योजनाओं पर काम करता है (देखें 4:32)।

तीसरा शब्द boule से लिया गया **मत** है, जो ''सलाह और विचार; सभा का इकट्ठा होना'' का संकेत देता है। परमेश्वर ने मसीह में अपनी मंशा में मनमानी से काम नहीं किया। उस ने ''सभा की बैठक'' बुलाई। कलीसिया के आरम्भ के दिन पतरस के संदेश में (प्रेरितों 2:23) प्रेरित ने यह कहते हुए कि यीशु को ''पहले से ठहराई हुई योजना के अनुसार'' (''ठहराई हुई मंशा''; NKJV; ''ठहराई हुई मत''; ASV) क्रुस पर दिए जाने के लिए सौंपा गया था (परमेश्वर की ''पहले से ठहराई हुई मंशा'') कहते हुए, इसी शब्द का इस्तेमाल किया। संसार या मनुष्य के होने से पहले जिस में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा यह तय करने के लिए कि पाप में गिरे मनुष्यों के जीवनों में पाप का सामना करने के लिए क्या किया जाए पवित्र सभा में इकट्ठा हुए, हम स्वर्ग के दृश्य की केवल कल्पना कर सकते हैं। यह तय किया गया कि खोई हुई मनुष्य जाति को छुड़ाने के लिए परमेश्वरत्व या ईश्वरीयता का एक सदस्य संसार में इस प्रकार से जन्म लेने के लिए, जैसे पहले कभी किसी का जन्म नहीं हुआ, ऐसे रहने के लिए जैसे कभी कोई नहीं रहा और अन्त में इस प्रकार मरने के लिए आए जैसे कभी कोई नहीं मरा था। परमेश्वर की योजना पर विचार हुआ, चिन्तन हुआ और इस पर मंथन किया गया; और यह ठहराया गया कि पुत्र उद्धारकर्त्ता बनने के लिए इस संसार में आए। वह पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए खुशी से आया, परन्तु इस योजना पर पूरी तरह से पहले से विचार कर लेने के बाद। ''मत'' परमेश्वर की मीरास के रूप में खोए हुओं को मसीह में लाने का निर्णय या योजना है।

आयत 12. परमेश्वर ने मसीह में जो कुछ हमारे लिए किया है, वह उस ने हमें आशा देने के लिए किया है और उस ने हमें अन्त तक आशा इसलिए दी है ताकि हम **उस की महिमा की स्तूति** के लिए बने रहें। पौलुस ने ''उस के अनुग्रह की महिमा'' की स्तूति की (1:6)। आशा के साथ-साथ छूटकारे, क्षमा और समझ के कारण हम परमेश्वर की स्तुति करते हैं (1:7-10)। हमें आशा मिली है, क्योंकि हम परमेश्वर की मीरास हैं।

''आशा'' के लिए proelpizo शब्द है जिस की परिभाषा बुएस्ट ने ''पहले से आशा करना, घटना के इस की पुष्टि करने से पहले किसी व्यक्ति या वस्तु में आशा'' के रूप में दी है। ''आशा रखना'' के लिए सामान्य यूनानी क्रिया elpizo

से जुड़े पूर्वसर्ग pro का बल यही है। हमें किसी व्यक्ति में अपने विश्वास के कारण ''मसीह में'' आशा है। हमें ''उस में'' आशा है क्योंकि हमने सुसमाचार की बात मानी है। ''मसीह में'' बपतिस्मा लिए जाने के समय (रोमियों 6:3) हमने ''मसीह में'' जहां हर आत्मिक आशीष मिलती है, जीना आरम्भ कर दिया। परन्तु इस आयत में जोर मसीह में हमारी आशा के होने पर है।

आयत 12 के सम्बन्ध में एक और अवलोकन किया जाना चाहिए। यह दिखाते हुए कि वह ''मसीह ही'' या ''मसीहा ही'' की बात कर रहा था, पौलुस ने ''मसीह'' से पहले यूनानी उपपद का इस्तेमाल किया गया है।

''आशा'' के लिए शब्द का अर्थ ''पहले से आशा रखना'' है जिस कारण कुछ व्याख्याकर्त्ताओं ने इस आयत का अर्थ यहूदी मसीही लोगों के लिए किया है जो मसीहा के आने की राह देखते थे और उस के आने से पहले आशा में बने हुए थे। पौलुस के लिखने के समय ये यहूदी मसीह में थे। इसलिए इस विचार के अनुसार वे उन अन्यजाति विश्वासियों से अलग थे, जिन्होंने ''मसीहा'' के आने की राह नहीं देखी थी। सैलमण्ड, वुएस्ट और विनसेंट जैसे व्याख्याकरों ने सुझाव दिया है कि पौलुस ने ''मसीह में आशा रखने'' में **हम जिन्होंने पहले आशा रखी थी** इस आशा का इस्तेमाल करने में अपने आपको अन्य यहूदी विश्वासियों के साथ मिलाया और फिर आयत 13 ''तुम'' humeis के इस्तेमाल में अन्यजाति मसीही लोगों की बात की।

क्या ''मसीह'' से पहले यूनानी उपपद का इस्तेमाल और बहुवचन व्यक्तिवाचक सर्वनाम ''हम'' का इस्तेमाल इस निष्कर्ष को सही ठहराता है? शायद नहीं। पहले तो यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि पौलुस ने इस अध्याय की पहली चौदह आयतों में सभी मसीहियों की बात करने के लिए ''हम'' और ''हमें'' शब्दों को इस्तेमाल किया। दूसरा, इस्त्राएल की मसीहा से जुड़ी आशा संसारिक थी (इस बात में कि लोग एक राजनैतिक मसीहा की राह देख रहे थे), इस कारण यह आशा शायद ही ''उस की महिमा की स्तुति'' बननी थी। तीसरा, पवित्र शास्त्र के इस पूरे भाग का विषय उन आशिषों को तय करना था जो मसीह में हैं, इस कारण यह नहीं हो सकता कि पौलुस ने अचानक पूर्व-मसीही दिनों की ओर अपने परिदृश्य को बदल दिया हो। चौथा, ''मसीह'' से पहले उपपद का इस्तेमाल पवित्र शास्त्र में आम है। इस योजना का इस्तेमाल अकेले इफिसियों में कम से कम सत्रह बार हुआ है और इसे यहां पर विशेष महत्व के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। पांचवां, इस आयत में मसीह में आशा मसीही की मीरास के पूरा होने की बात करती है, जिस पर पौलुस ने अगली आयतों में बात की है। इसलिए लैंस की, लिंकोन और अन्य लोगों के साथ हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि ''जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी'' इसका अर्थ हर मसीही के लिए है, जो पूरी मीरास पाने से पहले मसीह की प्रतिज्ञाओं में भरोसा जताता है, जो कि वर्तमान युग के अन्त में मसीह के प्रकट होने पर होगा।

नरक में कौन, कौन होगा?

जॉन स्टेसी

प्रत्येक वर्ष एक पुस्तक का प्रकाशन होता है, जिसमें यह लिखा होता है कि उस वर्ष में कौन, कौन है, अर्थात कौन किस ओहदे पर है या किसने कोई विशेष कार्य किया है। इस ''वर्ष की पुस्तक'' में ऐसे-ऐसे विशेष लोगों के नाम लिखे होते हैं जिन्होंने किसी क्षेत्र में विशेष नाम कमाया होता है। किन्तु क्या आप जानते हैं, कि शैतान के पास भी एक ऐसी सूची है जिसमें लिखा है कि नरक में कौन, कौन होगा। प्रकाशितवाक्य 21:8 में इस सूची का वर्णन करके बाइबल कहती है,'' पर डरपोकों, और अविश्वासियों और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारियों और टोन्हों और मूर्ति पूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है।'' अब यह पढ़कर शायद हमें ऐसा अनुभव हो कि निश्चय ही शैतान की इस सूची में हमारा नाम नहीं होगा। परन्तु जरा ध्यान से देखें!

सबसे पहले यहां वर्णन हुआ है ''डरपोकों'' का। इस शब्द का यहां तात्पर्य ''कायरों'' से है। पहली शताब्दि के अन्तिम दिनों में मसीही लोगों के ऊपर बड़े ही जबरदस्त अत्याचार हो रहे थे। उन पर यह जोर डाला जा रहा था कि वे कैसर अर्थात् रोम के सम्राट को प्रभु और परमेश्वर मानें और इस प्रकार मसीह का इन्कार करें। पौलुस ने, उस समय 1 तीमुथियुस 2:12 में लिखकर कहा था, ''यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे: यदि हम उसका इन्कार करेंगे तो वह भी हमारा इन्कार करेगा।'' उस समय बहुत से ऐसे मसीही थे जो कायर थे और मसीह के प्रति वफादार नहीं थे। मसीही जीवन को बाइबल में एक संघर्षपूर्ण जीवन बताया गया है, और मसीही लोगों को सिपाही कहकर सम्बोधित किया गया है। पौलुस 2 तीमुथियुस 2:3 और 4 पदों में यूं कहता है: ''मसीह यीशु के अच्छे योद्धा की नाई मेरे साथ दुख उठा। जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो इसलिये जाता है कि अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करें, और अपने आपको संसार के कामों में नहीं फंसाता।'' सो यदि आप यीशु का अनुकरण करना चाहते हैं, तो वह चाहता है, कि आप उसके साथ लड़ाई के मैदान में उतरें। वह ऐसे लोगों को चाहता है जो केवल तमाशा देखनेवाले न हों पर मैदान में आकर उसके साथ मिलकर लड़ें। आप कहां हैं?

दूसरा नाम इस सूची में है ''अन्धविश्वासियों'' का। ये वे लोग थे जो मसीह पर विश्वास नहीं करते थे। पर उनमें वे मसीही लोग भी शामिल थे जिनका विश्वास मसीह में कमजोर था। ऐसे लोगों का वर्णन करके पौलुस 2 तीमुथियुस 3:5 में कहता है कि ''वे शक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे।'' जबकि यीशु उन से कहता है कि वे मैदान में आकर युद्ध करें, वे कहते हैं, कि हम नहीं कर सकते। उन्हें मसीह पर भरोसा नहीं है। क्या यह चित्र आपका है?

तीसरे स्थान पर नाम है ''घिनौनों'' का। इस शब्द का तात्पर्य ''अपवित्र'' से है। प्रकाशितवाक्य 21:26 में यूहन्ना कहता है, ''और उसमें (स्वर्ग में) कोई अपवित्र

वस्तु . . . प्रवेश न करेगी।'' याकूब 1:27 में लिखा है, ''हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल शक्ति यह है, कि . . . अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें।'' क्या आपके वस्त्र साफ हैं?

चौथा शब्द इस सूची में ''हत्यारों'' का है। पर शायद आप कहें कि आप कोई हत्या कभी नहीं कर सकते। किन्तु 1 यूहन्ना 3:15 में यूं लिखा है, ''जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है, और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता।'' क्या आप किसी से बैर रखते हैं?

फिर पांचवां शब्द है ''व्यभिचारियों'' इसका तात्पर्य ऐसे लोगों से है जो वैवाहिक जीवन के अतिरिक्त किसी स्त्री या पुरूष से सम्बन्ध रखते हैं। पर शायद आप कहें कि आप में ऐसा कोई दोष नहीं है। किन्तु, मत्ती 5:28 में यीशु ने कहा था, ''कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका।''

छठा शब्द सूची में है ''टोन्हों'', ये वे लोग हैं जो जादू-मन्त्र आदि करके लोगों को धोखा देते हैं।

सातवें स्थान पर नाम है ''मूर्तिपूजकों'' का। बहुतेरे मसीही कहलानेवाले लोग भी आज विभिन्न प्रकार की मूर्तो के सामने झुकते हैं। पौलुस ने कुलुस्सियों 3:5 में कहा था कि ''लोभ मूर्तिपूजा के बराबर है।'' क्या आप भी इस प्रकार की मूर्ति पूजा के लिए दोषी हैं?

सूची में अंतिम शब्द है,''झूठों।'' सुलैमान ने नीतिवचन 12:22 में लिखकर कहा था कि ''झूठ बोलनेवाले होठों से परमेश्वर घृणा करता है।'' न केवल अपने होठों से ही परन्तु अपने जीवनों से भी हम झूठ बोल सकते हैं। तीतुस 1:16 में लिखा है, ''वे कहते हैं, कि हम परमेश्वर को जानते हैं: पर अपने कामों से उसका इन्कार करते हैं...'' क्या आप झूठ बोलते हैं?

जितने भी लोगों के बारे में हमने यहां देखा है, ये सब शैतान की सूची में हैं, और यदि वे अपना मन नहीं फिराएंगे, तो हमेशा के लिये नरक में प्रवेश करेंगे।

पुराने नियम के उद्देश्य

रॉयस फ्रैड्रिक

''पुराने नियम'' वाला बाइबल का भाग (यानी मूसा की व्यवस्था) केवल यहूदियों (यानी इस्त्राएल जाति) को दिया गया था। यीशु की क्रूस पर मृत्यु के समय इसे हटा दिया गया: ''*...उसे कीलों पर से जड़कर सामने से हटा दिया है*'' (कुलुस्सियों 2:14; देखें गलातियों 3:24, 25; रोमियों 7:4, 6)। इसके स्थान पर, यीशु ने अपना नया नियम (या ''वाचा''; इब्रानियों 8:6-9: 9:15-17) दे दिया। यह वाचा हर जाति के सब लोगों के लिए है (मत्ती 28:19)।

मूसा की व्यवस्था को हटा दिया गया है तो फिर नये नियम में पुराने नियम वाली बाइबल के बहुत से हवाले क्यों हैं? चाहे परमेश्वर की व्यवस्था आज के उसके लोगों के लिए नहीं है परन्तु पुराना नियम आज भी बहुत से उद्देश्यों को पूरा करता है:

पुराना नियम हमें परमेश्वर के विषय में बताता है।

इससे पता चलता है कि वह हमारा बनाने वाला है (मत्ती 19:4, 5)।

इससे पता चलता है कि वह पुरानी और नई दोनों वाचाओं का देने वाला है (इब्रानियों 8:6-9)।

यह हमें उसके स्वभाव के बारे में बताता है (1 पतरस 3:10-12)।

पुराना नियम हमें हमारे बारे में बताता है।

यह हमें पाप के आरम्भ और इसकी विनाशकारी शक्ति के बारे में बताता है। (रोमियों 5:12; 1 यूहन्ना 3:11, 12)।

यह हमें बताता है कि हम कितने पापी हैं (रोमियों 3:10-23; 7:13)।

पुराना नियम हमें मसीह के विषय में बताता है।

यह हमें उस जाति की ऐतिहासिक और धार्मिक पृष्ठभूमि बताता है जिसमें से मसीह आया (लूका 2:23, 24)।

इसमें परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसकी पहचान बताते हुए उसके जीवन तथा काम की भविष्यवाणी की गई (यशायाह 7:14; मत्ती 1:13; मीका 5:2; मत्ती 2:6)।

इसने यहूदियों को मसीह तक लाने के लिए उन्हें अगुआई दी (गलातियों 3:23-25)।

उन लोगों के साथ इसके पन्नों में से ''चलते'' हुए यह हमें मसीह तक ले जाता है (2 तीमुथियुस 3:15; 1 कुरिन्थियों 10:7, 11)।

''जितनी बातें पहले से लिखी गई, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें'' (रोमियों 15:4)।

परन्तु सनद रहे

मैक्सी बी. बोरन

- लोग कहते हैं कि ''बहुत सी कलीसियाएं हैं ''**परन्तु सनद रहें** कि बाइबल बताती है की कलीसिया केवल एक ही है (मत्ती 16:18; इफिसियों 1:22, 23 और इफिसियों 4:4)।
- लोग कहते हैं कि उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से है और मनुष्य के लिए इसकी आज्ञा मानने की कोई आवश्यकता नहीं है, **परन्तु सनद रहें** कि बाइबल मनुष्य को इसे मानने के महत्व को बताती है (मत्ती 7:21-27; तीतुस 2:11, 12; प्रेरितों 2:37, 38; 10:34, 35; याकूब 1:22-25; 1 कुरिन्थियों 15:58)।

- लोग कहते हैं कि उद्धार केवल विश्वास से होता है ओर इसके लिए कुछ और करने की आवश्यकता नहीं है, **परन्तु सनद रहे** कि बाइबल बताती है कि मसीह केवल उनका उद्धार करता है जो उसकी आज्ञा को मानते हैं (इब्रानियों 5:9, और पतरस 1:22), और जो उसकी आज्ञा नहीं मानते हैं उन पर उसका क्रोध प्रकट होगा (रोमियों 2:8, और 2 थिस्सलुनीकियों 1:8, 9)।
- लोग कहते हैं कि बपतिस्मे की कोई आवश्यकता है नहीं और उद्धार से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है, **परन्तु सनद रहे** कि बाइबल बपतिस्मे को पापों की क्षमा के लिए आवश्यक बताती है (मरकुस 16:15, 16: प्रेरितों 2:38; 22:16, और 1 पतरस 3:20, 21)।
- लोग कहते हैं ''एक बार उद्धार हो गया तो सदा के लिए हो जाता है'' **परन्तु सनद रहे** कि बाइबल बताती है कि मसीही लोगों के लिए विश्वास से वापस फिर जाना सम्भव है और इसका अर्थ यह हुआ कि अंत में वे नाश हो सकते हैं (1 कुरिन्थियों 10:12; 1 तीमुथियुस 2:19, 20 ; 4:1; गलातियों 5:4; इब्रानियों 6:4-6; 2 पतरस 2:20-22; मत्ती 13:41, 42)।
- लोग कहते हैं कि ''कोई जो भी विश्वास करता हो, जैसे भी आराधना करता हो, जो भी शिक्षा देता हो उससे कोई फर्क नहीं पड़ता।'' **परन्तु सनद रहे** कि बाइबल बताती है कि फर्क पड़ता है (यूहन्ना 8:31, 32; याकूब 1:31; यूहन्ना 4:23, 24; मत्ती 15:6-9; 28:20; 1 तीमुथियुस 4:16; प्रेरितों 26:25)।
- लोग कहते हैं कि कोई जैसे चाहे वैसे जी सकता है, चाहे उसने कितनी बार भी शादी की, तलाक दिया हो, व्यभिचार किया है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। समलैंगिकता या जूआ या नशे करना गलत नहीं है। **परन्तु सनद रहे** कि बाइबल इससे अलग बताती है (मत्ती 19:3-9; 1 कुरिन्थि 6:9, 10; रोमियों 13:12-14; इफिसियों 5:3-11; गलातियों 5:19-21; 6:7, 8)।
- लोग हर तरह की बातें कहते हैं। कई बार चीजों को बिगाड़ते, खराब करते और बदल देते हैं, कई बार वे झूठ बोलते और परमेश्वर की निंदा करते हैं। **परन्तु सनद रहे** कि परमेश्वर का वचन कायम रहता है और सच्चा है और हमारा न्याय इसी से होगा (मत्ती 4:4; 24:35; प्रेरितों 20:32; इब्रानियों 4:12; यूहन्ना 12:48)।

क्या मैं बाइबल तभी पढ़ूंगा यदि ...?

पॉल एस. जोस्टन

विलियम मैक्फर्सन के चेहरे पर बारूद फट गया। उसकी आंखें और हाथ जाते रहे और चेहरे के कुछ भाग सुन हो गए। उसे अहसास हुआ कि बाइबल उसके लिए कितनी महत्वपूर्ण है और उससे इसकी सामर्थ की कितनी आवश्यकता है। नकली हाथ लगने के कारण वह ब्रेल लिपी नहीं पड़ सकता था। उसने बिन्दियों के ऊपर होंठ लगाने की कोशिश की, परन्तु होंठ सुन थे। उसने पाया कि वह बिन्दियों वाले मोनोटाइप के सिस्टम

पर अपनी जीभ के इस्तेमाल से समझ सकता है। लोहे के कारण उसके होंठों और जीभ से लहू बहने लगता और घाव हो जाते परन्तु वह वर्णमाला के केवल एक अक्षर को सीखते रहने में सहायता के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता था। अपने जीवन के बाद के पैंसठ वर्षों में उसने अपनी जीभ से चार बार पूरी बाइबल पढ़ ली थी।

क्या मैं बाइबल तभी पढ़ूंगा जब मेरे साथ ऐसा ही हो जैसा मैक्फर्सन के साथ हुआ? क्या मुझे परमेश्वर की इच्छा को जानने के लिए तभी इच्छा होगी जब मेरे साथ भी ऐसा हो होगा जैसा उसे बाद में समझ आया? मुझे तो लगता है कि कहीं मैं यह फैसला न कर दूं कि मैं फिर कभी बाइबल नहीं पढ़ सकता!''

क्या मैं बाइबल तभी पढ़ूंगा यदि मुझे अपने व्यस्त जीवन में काम करने के लिए रोज आधा घण्टा पहले से उठना पड़े? या अपने पसंदीदा टीवी कार्यक्रम को छोड़ दूं। यदि उस समय मुझे याद आए कि आज मैंने अपनी बाइबल नहीं पढ़ी और इसके बाद मेरे पास समय नहीं होगा?

क्या मैं अपनी बाइबल तभी पढ़ूंगा (काश मैंने मैक्फर्सन के बारे में न सुना हो) यदि मुझे अच्छा न लग रहा हो, या यदि काम पर मेरा दिन बड़ा बुरा गुजरा हो, या मैं बहुत थक गया होऊं? (मैं हैरान हूं कि उस आदमी को जीभ से बाइबल पढ़ना कैसे हो गया?) या मैं पढ़ूंगा चाहे मैं धीमे पढ़ने वाला भी हूं। या केवल एक या दो अध्याय पढ़ने के लिए मुझे सारा दिल लग जाता हो? क्या मैं बाइबल उन अवसरों पर पढ़ूंगा जब परमेश्वर के लोग इकट्ठा होते हैं (रविवार सुबह, बुधवार रात, आदि)। यदि मुझे आराधना के बाद भूखा रहना पड़ता हो या वहां तक जाने के लिए काफी चलकर जाना पड़े।

आज बाइबल पढ़ने से अपने आपको दूर रखने के लिए कितने ''यदि'' का इस्तेमाल करते हैं? क्या यह आपके लिए किसी काम की बात है या नहीं? यदि हां तो आप अभी इसका कुछ करो! अपनी बाइबल को प्रतिदिन पढ़ें।

वो मैक्फर्सन। मुझे लगता है कि उसका नमूना जीवन भर मेरा पीछा करता रहेगा!

कोई कैसे जान सकता है?

जिमी जिविडन

बाइबल के नाम पर परस्पर विरोधी शिक्षाएं दी जाती हैं। दोनों ओर के उपदेशक यह दावा करते हुए कि जो कुछ वे बता रहे हैं वह परमेश्वर की इच्छा है, लोगों के मनों को उलझन में डाल देते हैं। कैसे पता चल सकता है कि कौन परमेश्वर की ओर से बात करता है?

एक जन दावा करता है कि उसकी शिक्षा परमेश्वर की ओर से है क्योंकि जो कुछ वह कहता है उसका सबूत मनुष्यों की परम्परा है। कलीसियाओं, कौंसिलों तथा मनुष्य के धर्मसारों से इसकी पुष्टि हो चुकी है। समस्या यह है कि मनुष्य की परम्पराएं परिवर्तनीय और विरोधाभासी हैं। एक कलीसिया का अकीदा दूसरी कलीसिया के अकीदे से बिल्कुल उल्ट है। धार्मिक अधिकार के लिए ऐसी मानवीय परम्पराओं पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। परमेश्वर गड़बड़ी का परमेश्वर नहीं है (1 कुरिन्थियों 14:33)।

किसी और का मानना है कि उसकी शिक्षा परमेश्वर की ओर से है क्योंकि उसे नया प्रकाशन प्राप्त हुआ है। समस्या यह है कि मार्मन चर्च वाले कथित प्रकाशन परिवर्तनीय और विरोधाभासी हैं। मार्मन चर्च वालों की शिक्षाएं यदि विरोधाभासी हैं तो स्पष्ट है कि दोनों में से कोई तो गलत है। जब वे बदल जाती हैं तो स्पष्ट है कि वे परमेश्वर की ओर से नहीं हो सकतीं। परमेश्वर तो बदलता नहीं है और न ही वह अपना विरोधी है। नये प्रकाशन को धार्मिक अधिकार के लिए कसौटी नहीं माना जा सकता।

कोई और दावा करता है कि उसकी शिक्षा परमेश्वर की ओर से है क्योंकि इसे बहुत से लोग मानते हैं। उसकी नजर में लोगों की आवाज परमेश्वर की आवाज है। वह यह मानता है कि शिक्षा की सच्चाई को उसके ग्रहण करने वाले के द्वारा तय किया जाता है कि यह सही है या गलत। यदि वह किसी बात को अस्तित्व में मानकर यह मान ले कि यह सच है तो यह ''उसके लिए'' सच है। दो अलग-अलग शिक्षाएं तभी सही हो सकती हैं यदि यह मान लिया जाए कि दोनों सही हैं। उसकी नजर में कोई भी सच्चाई निष्पक्ष, सम्पूर्ण या सार्वभौमिक नहीं है। लोग सच्चाई की इस सापेक्षिक, व्यक्तिनिष्ठ कसौटी को अपने विश्वास को तय करने के लिए इस्तेमाल में लाते हैं। ऐसा विश्वास विरोधाभासी और परिवर्तनशील है। यह परमेश्वर की प्रकृति को ही तय कर देता है जो कि ''कल और आज और युगानुयुग एकसा है'' (इब्रानियों 13:8)।

धार्मिक सच्चाई की कसौटी केवल और केवल बाइबल है। यह परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई है, सम्पूर्ण है और इसमें कोई विरोधाभास नहीं। ''सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने , और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए'' (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

क्षमा का क्या अर्थ है?

अपराध का बोझ लेकर जीना बहुत बड़ी बात है। मानवीय सम्बन्धों में भी आवश्यक है कि दी गई क्षमा और मिली माफी के साथ पश्चात्ताप के द्वारा हर गलती को भुला दिया जाए।

बाइबल में हम पढ़ते हैं, ''...तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुमको तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुमसे छिपा है कि वह नहीं सुनता'' (यशायाह 59:2)।

हमारे जीवनों में से हमारे पापों को कैसे क्षमा किया जा सकता है या कैसे मिटाया जा सकता है? ''... परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया और उनके **अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया** ...'' (2 कुरिन्थियों 5:19)। यीशु के लहू के द्वारा हमारे पाप धो दिए गए हैं।

इसलिए क्षमा का अर्थ हमारे जीवनों का हिसाब-किताब रखने वाली परमेश्वर की पुस्तक में से पाप के दाग को मिटाकर हमारे प्राणों को शुद्ध कर देना है।

''अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)।